

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 12 अध्याय 11: भगवान् का रूप

14 September 2026



सूत गोस्वामी बताते हैं कि विद्वान् उपासना में भगवान् विष्णु का ध्यान किस प्रकार करते हैं — भगवान् का प्रत्येक आभूषण, आयुध तथा परिकर विश्व के एक जीवन्त तत्त्व के रूप में प्रकट, ताकि उनके रूप का ध्यान करना समस्त सत्ता का ध्यान करना बन जाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। ऋषि मार्कण्डेय की कथा सुन चुकने के बाद, नैमिषारण्य के ऋषि अब उपासना के मर्म पर एक प्रश्न की ओर मुड़ते हैं: तन्त्रज्ञ भगवान् के अंगों, आयुधों, आभूषणों तथा परिकरों का ध्यान किस प्रकार करते हैं? सूत गोस्वामी सम्पूर्ण भागवत के सर्वोच्च अंशों में से एक से उत्तर देते हैं। वे दिखाते हैं कि भगवान् का प्रत्येक चिह्न केवल अलंकरण नहीं, अपितु एक जीवन्त प्रतीक है — शंख, चक्र, गदा, वक्ष पर मणि, प्रत्येक विश्व के एक तत्त्व का द्योतक। फिर वे उस विराट पुरुष का वर्णन करते हैं जिसकी देह ही विश्व है, और अन्त में सूर्य-देव की महिमा खोलते हैं, जो स्वयं श्रीहरि ही हैं, वर्ष के बारह मासों में अपने बदलते परिकर — ऋषियों, गन्धर्वों, अप्सराओं तथा दिव्य प्राणियों — सहित विचरण करते हुए। यह अध्याय हमें समस्त सृष्टि को भगवान् की ही देह तथा अलंकरण के रूप में देखना सिखाता है।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 12 (द्वादश स्कन्ध — अन्तिम स्कन्ध)
- अध्याय: 11 (एकादश अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: भगवान् का ध्यान-रूप तथा सूर्य-देव का परिकर
- मुख्य वक्ता: सूत गोस्वामी (उग्रश्रवा), नैमिषारण्य के ऋषियों को कथा सुनाते हुए
- मुख्य श्रोता: नैमिषारण्य के ऋषिगण, शौनक के नेतृत्व में
- मुख्य विषय-वस्तु: भगवान् के अंगों, आयुधों, आभूषणों तथा परिकरों का प्रतीकार्थ; विराट पुरुष; तथा बारह मासों के बदलते परिकर सहित सूर्य-देव की महिमा
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 12, अध्याय 11, श्लोक 1–50
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

ऋषियों का प्रश्न

ऋषिश्रेष्ठ शौनक सूत के समक्ष एक गहन प्रश्न रखते हैं। उन्हें उपासना-सम्बन्धी समस्त शास्त्रों के अर्थ में निष्णात जानकर, ऋषि पूछते हैं कि तन्त्र में प्रवीण जन सक्रिय उपासना के क्रम में भगवान् विष्णु के — श्री के स्वामी, जो शुद्ध चैतन्य हैं — अंगों, परिकरों, आयुधों तथा आभूषणों का ध्यान किस प्रकार करते हैं, और उन्हें किन तत्त्वों से निर्मित मानते हैं। यह वे इसलिए पूछते हैं, वे कहते हैं, क्योंकि वे उस उपासना-मार्ग को जानने के इच्छुक हैं जिससे मर्त्य अमरत्व पा सके।

श्रीशौनक उवाच

अथेममर्थं पृच्छामो भवन्तं बहुवित्तमम् ।

समस्ततन्त्राद्धान्ते भवान् भागवत तत्त्ववित् ॥ १ ॥

śrī-śaunaka uvāca athemam arthaṁ pr̥cchāmo bhavantaṁ bahu-vittamam samasta-tantra-rāddhānte bhavān bhāgavata tattva-vit

अर्थ: श्री शौनक ने कहा: अब हम आपसे यह विषय पूछते हैं, क्योंकि आप अनेक विषयों के ज्ञाताओं में अग्रगण्य हैं; आप उपासना-सम्बन्धी समस्त शास्त्रों के सिद्धान्तों का यथार्थ अर्थ जानते हैं, हे भगवान् के महान् भक्त। (स्कन्ध 12, अध्याय 11, श्लोक 1)

अपने गुरुओं को प्रणाम करके, सूत भगवान् विष्णु की उन दुर्बोध महिमामयी विभूतियों का वर्णन करने को सहमत होते हैं — जिनकी चर्चा ब्रह्मा तथा अन्य आचार्यों ने वेदों तथा तन्त्रों के प्रकाश में की है।

विराट पुरुष

सूत विराट से आरम्भ करते हैं। ब्रह्माण्ड, वे बताते हैं, नौ मूल तत्त्वों — प्रकृति तथा आठ अन्य — तथा सोलह विकारों से बना है। आत्मा से अधिष्ठित यह विराट रूप तीनों लोकों को जन्म देता है। यही, सूत कहते हैं, भगवान् का पौरुष अर्थात् विराट रूप है, जिसकी देह ही विश्व है।

एतद् वै पौरुषं रूपं भूः पादौ द्यौः शिरो नभः ।

नाभिः सूर्योऽक्षिणी नासे वायुः कर्णौ दिशः प्रभोः ॥ ६ ॥

प्रजापतिः प्रजननमपानो मृत्युरीशितुः ।

तद्बाहवो लोकपाला मनश्चन्द्रो भ्रुवौ यमः ॥ ७ ॥

लज्जोत्तरोऽधरो लोभो दन्ता ज्योत्स्ना स्मयो भ्रमः ।

रोमाणि भूरुहा भूमनो मेघाः पुरुषमूर्धजाः ॥ ८ ॥

etad vai pauruṣam rūpaṁ bhūḥ pādau dyauḥ śiro nabhaḥ nābhiḥ sūryo 'kṣiṇī nāse vāyuḥ karṇau
diśaḥ prabhoḥ prajāpatiḥ prajānanam apāno mṛtyur īśituḥ tad-bāhavo loka-pālā manaś candro
bhruvau yamaḥ lajjottaro 'dharo lobho dantā jyotsnā smayo bhramaḥ romāṇi bhūruhā bhūmno
meghāḥ puruṣa-mūrdhajāḥ

अर्थ: यही भगवान् का विराट रूप है: पृथ्वी उनके चरण हैं, स्वर्ग उनका शीश, आकाश उनकी नाभि, सूर्य उनके नेत्र, वायु उनके नासिका-छिद्र, दिशाएँ उनके कर्ण; प्रजापति उनका जननेन्द्रिय, मृत्यु उनका अपान, दिक्पाल उनकी भुजाएँ, चन्द्रमा उनका मन, तथा यम उनकी भ्रुकुटियाँ; लज्जा उनका ऊपरी होंठ तथा लोभ नीचला, चाँदनी उनके दाँत तथा माया उनकी मुस्कान, वृक्ष उनकी देह के रोम तथा मेघ उस अनन्त पुरुष के शिरोकेश। (स्कन्ध 12, अध्याय 11, श्लोक 6-8)



विराट पुरुष जिसकी देह ही समस्त सृष्टि है — पृथ्वी उनके चरण, स्वर्ग उनका शीश, सूर्य उनके नेत्र, वृक्ष उनकी देह के रोम — ताकि सम्पूर्ण विश्व एक ही भगवान् के रूप में दृष्ट हो।

विराट पुरुष, सूत जोड़ते हैं, गोलों की व्यवस्था के सापेक्ष वही अनुपात रखते हैं जो मर्त्य मनुष्य अपने अंगों की व्यवस्था के सापेक्ष रखता है।

जीवन्त तत्त्वों के रूप में आभूषण तथा आयुध

अब सूत विराट देह से हृदय में उपासित भगवान् के ध्यान-रूप की ओर मुड़ते हैं — और यहाँ प्रत्येक चिह्न सत्ता का एक तत्त्व बन जाता है। भगवान् के वक्ष पर कौस्तुभ मणि जीव की शुद्ध चेतना है, उनका ही अंश; श्रीवत्स चिह्न उस चेतना का प्रसारित तेज है। उनकी वनमाला माया के तीन गुण हैं; कटि का पीत वस्त्र वेद हैं; तथा ओंकार उनका त्रिवृत यज्ञोपवीत है। सांख्य तथा योग उनके मकराकृति कुण्डलों की जोड़ी हैं, और अभयदायी ब्रह्मलोक उनका मुकुट है।

उनकी शय्या, शेषनाग, अव्यक्त मूल प्रकृति है, जिस पर वे विश्राम करते हैं; और उस पर बिछा कमल सत्त्वगुण है, दिव्य गुणों से अलंकृत। उनके आयुध भी तत्त्व हैं: गदा कौमोदकी प्राण-शक्ति है; शंख पाञ्चजन्य जल-तत्त्व है; चक्र सुदर्शन अग्नि-तत्त्व है; आकाश-सम स्वच्छ खड्ग आकाश-तत्त्व है; उनकी ढाल तमस् है; उनका शृंग-धनुष काल है; तथा उनका तूणीर कर्म है। दस कॉस्मिक इन्द्रियाँ उनके बाण हैं, कॉस्मिक मन उनका रथ, तथा सूक्ष्म तत्त्व उसका बाह्य भाग; और अपने हाथों की मुद्राओं से वे भक्तों को आशीर्वाद तथा रक्षा देने की तत्परता दर्शाते हैं। उपासना-स्थल को सूर्य-मण्डल के रूप में देखना चाहिए; मन्त्र-दीक्षा को आत्म-समर्पण के रूप में चिन्तन करना चाहिए; और भगवान् की उपासना को समस्त पापों के उन्मूलन के रूप में।

अपने छह दिव्य गुणों — ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान तथा वैराग्य, जो सम्मिलित रूप से भग शब्द से द्योतित हैं, और उनके भगवान् नाम को सार्थक करते हैं — को धारण करते हुए, वे लीला-हेतु एक कमल लिए हैं, जबकि उनके दो परिकर चँवर तथा पंखा लिए हैं। अपने शीश पर वे अपना ही धाम, वैकुण्ठ, छत्र के रूप में धारण करते हैं; त्रिवेद उनके वाहन गरुड़ बनते हैं; उनकी अभिन्न शक्ति देवी श्री के रूप में प्रकट होती है; विष्वक्सेन, उनके परिकरों के प्रधान, तन्त्रों को मूर्त करते हैं; और उनकी आठ सिद्धियाँ, अणिमा आदि, आठ द्वारपाल — नन्द आदि — के रूप में खड़ी हैं। परम पुरुष स्वयं वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध — इन चार रूपों में प्रकट हैं, और चेतना की चार अवस्थाओं — जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तुरीय — के सम्बन्ध में विश्व, तैजस, प्राज्ञ तथा तुरीय के रूप में ध्याए जाते हैं।

भगवान् की स्तुति

सूत बताते हैं कि एक ही भगवान्, यद्यपि स्वयं-प्रकाश तथा अपने ही आनन्द में पूर्ण हैं, अपनी माया से ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के नामों से विश्व की सृष्टि, पालन तथा संहार करते हैं, जबकि उनकी चेतना सदा असीम रहती है; और उनके भक्त उन्हें अपने ही आत्मा के रूप में जानते हैं। तब वे भगवान् की श्रीकृष्ण-अवतार में एक कोमल स्तुति करते हैं।

श्रीकृष्ण कृष्णसख वृष्णयुषभावनिधुग्
राजन्यवंशदहनानपवर्गवीर्य ।
गोविन्द गोपवनिताव्रजभृत्यगीत-
तीर्थश्रवः श्रवणमङ्गल पाहि भृत्यान् ॥ २५ ॥

*śrī-kṛṣṇa kṛṣṇa-sakha vṛṣṇy-ṛṣabhāvani-dhruḡ- rājanya-vaṁśa-dahanānapavarga-vīrya govinda
gopa-vanītā-vraja-bhṛtya-gīta- tīrtha-śravaḥ śravaṇa-maṅgala pāhi bhṛtyān*

अर्थ: हे श्रीकृष्ण, अर्जुन के सखा, वृष्णियों में श्रेष्ठ, पृथ्वी के विरोधी राजाओं को भस्म करने वाली अग्नि, जिनका पराक्रम कभी विफल नहीं होता, हे गोविन्द, जिनकी पावन महिमा गोपियों तथा भक्तों द्वारा गाई जाती है, और जिनके नाम सुनने में मंगलमय हैं — अपने सेवकों की रक्षा कीजिए। (स्कन्ध 12, अध्याय 11, श्लोक 25)



भक्त श्रीकृष्ण, गोविन्द की शरण लेते हैं, जिनकी महिमा ब्रज की गोपियाँ गाती हैं और जिनके नाम सुनने-मात्र में मंगलमय हैं — केवल उनकी रक्षा की प्रार्थना करते हुए (श्लोक 25)।

जो प्रातः उठकर, शुद्ध होकर, अपने मन को भगवान् में स्थिर करके इस वर्णन का पाठ करता है, सूत कहते हैं, वह हृदय में विराजमान ब्रह्म का साक्षात्कार करता है।

सूर्य-देव की महिमा

तब शौनक भगवान् की महिमा के एक अन्य रूप के विषय में पूछते हैं: सूर्य-देव का परिकर, जो मास-दर-मास बदलता है, वर्ष भर सात का एक भिन्न समूह ड्यूटी पर रहता है। सूत बताते हैं कि यह दृश्य सूर्य, जो जगत् को चलाता है, समस्त प्राणियों के अन्तर्यामी भगवान् विष्णु की सनातन माया से अस्तित्व में लाया गया है। यद्यपि एक तथा अद्वितीय, सूर्य-देव — जो वस्तुतः श्रीहरि ही हैं — विविध नामों से कहे जाते हैं, क्योंकि वे समस्त वैदिक कर्मों के स्रोत हैं; और अपनी अनादि माया के कारण वे काल, स्थान, कर्म, कर्ता, करण, कर्तव्य, शास्त्र, द्रव्य तथा फल के नामों से पुकारे जाते हैं। काल का रूप धारण करके, वे चैत्र से आरम्भ करके बारह मासों में अपने बारह भिन्न परिकर-गणों सहित अपना पथ चलते हैं।

तब सूत, मास-दर-मास, बारह समूहों के नाम लेते हैं — प्रत्येक में सूर्य-देव एक विशेष नाम से, तथा एक अप्सरा, एक राक्षस, एक नाग, एक यक्ष, एक ऋषि, तथा एक गन्धर्व। इस प्रकार धाता, कृतस्थली, हेति, वासुकि, रथकृत्, पुलस्त्य तथा तुम्बुरु चैत्र मास का संचालन करते हैं; अर्यमा तथा उनके साथी वैशाख का; और इस प्रकार वर्ष की समस्त ऋतुओं में, प्रत्येक मास अपने ही पावन सप्तविध परिकर से धारित। ये समूह, सूत कहते हैं, उनके पापों को हर लेते हैं जो प्रातः-सायं इन्हें स्मरण करते हैं।

परिकर के ऋषि सूर्य-देव की साम, ऋक् तथा यजुर् वेदों के मन्त्रों से स्तुति करते हैं; गन्धर्व उनका गान करते हैं जबकि अप्सराएँ उनके समक्ष नृत्य करती हैं; नाग उनके रथ के भागों को जोड़े रखते हैं, यक्ष उसे सेवा हेतु तैयार करते हैं, तथा बलशाली राक्षस उसे पीछे से धकेलते हैं। और साठ सहस्र शुद्ध-मन ब्रह्मर्षि, वालखिल्य, सूर्य-देव के आगे चलते हुए उन्हें मन्त्रों से स्तुत करते हैं।

वालखिल्याः सहस्राणि षष्टिर्ब्रह्मर्षयोऽमलाः ।

पुरतोऽभिमुखं यान्ति स्तुवन्ति स्तुतिभिर्विभुम् ॥ ४९ ॥

vālakhilyāḥ sahasrāṇi ṣaṣṭir brahmarṣayo 'malāḥ purato 'bhimukhaṁ yānti stuvanti stutibhir vibhum

अर्थ: साठ सहस्र शुद्ध ब्रह्मर्षि, वालखिल्य नाम से विख्यात, भगवान् के सम्मुख आगे चलते हैं और अपने स्तोत्रों से उस सर्वव्यापी की स्तुति करते हैं। (स्कन्ध 12, अध्याय 11, श्लोक 49)



सूर्य-देव का देदीप्यमान रथ, जो स्वयं श्रीहरि ही हैं, वर्ष भर अपने सप्तविध परिकर सहित चलता हुआ — ऋषि वेद-मन्त्र पढ़ते, गन्धर्व गाते, अप्सराएँ नृत्य करतीं, तथा वालखिल्य ऋषि आगे चलते हुए (श्लोक 49)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सम्पूर्ण विश्व भगवान् की देह है। विराट पुरुष में पृथ्वी तथा स्वर्ग, सूर्य तथा चन्द्र, अनन्त भगवान् के ही अंग-रूप में दृष्ट होते हैं — हमें समस्त सृष्टि को पावन तथा दिव्य देखना सिखाते हुए (श्लोक 6-8)।
2. भगवान् का प्रत्येक चिह्न एक जीवन्त सत्य है। शंख, चक्र, गदा, मणि तथा माला केवल आभूषण नहीं, अपितु सत्ता के तत्त्व हैं; उनके रूप का ध्यान करना समस्त अस्तित्व-क्रम का ध्यान करना है (श्लोक 10-16)।

3. उपासना पाप का उन्मूलन है। यह अध्याय उपासना को ही आत्म-समर्पण तथा आन्तरिक शुद्धि के रूप में प्रस्तुत करता है — वह भावित अर्पण जो भगवान् के प्रकाश में पापों को घोल देता है (श्लोक 17)।

4. सूर्य-देव श्रीहरि का ही रूप हैं। जो सूर्य जगत् का पालन करता है, अपने सदा-बदलते परिकर सहित, वह स्वयं भगवान् हैं जो प्रत्येक कल्प में लोकों की रक्षा हेतु अपनी शक्ति को विभाजित करते हैं — यह स्मरण कि दिव्य सत्ता सृष्टि को निरन्तर धारण करती है (श्लोक 29-32, 50)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह अध्याय देखने की एक अद्भुत रीति प्रदान करता है। हम भगवान् के शंख तथा चक्र को सुन्दर प्रतीक, तथा सूर्य को एक महान् प्राकृतिक पिण्ड मानने के अभ्यस्त हैं। किन्तु सूत हमें पुनः देखने का, और सर्वत्र एक ही भगवान् को पाने का, निमन्त्रण देते हैं। उनके हाथ की गदा हमारे भीतर की प्राण-शक्ति है; उनके वक्ष की मणि हमारी अपनी आत्मा का शुद्ध प्रकाश है; हमारे चरणों के नीचे की पृथ्वी उनके चरण हैं, आकाश उनकी नाभि, वृक्ष उनकी देह के रोम। इस दृष्टि में कुछ भी केवल जड़ नहीं — सब कुछ भगवान् का रूप, उनका अलंकरण, उनकी जीवन्त उपस्थिति है। और जो सूर्य प्रत्येक प्रातः उदित होता है वह कोई दूर का पिण्ड नहीं, अपितु स्वयं श्रीहरि हैं, जो वर्ष को धारण करने तथा लोकों की रक्षा करने हेतु अपनी शक्ति को बारह में विभाजित करते हैं, गाते गन्धर्वों तथा साठ सहस्र प्रकाश-ऋषियों से सेवित। इस प्रकार उपासना करना ईश्वर को अन्यत्र ढूँढ़ना छोड़कर उन्हें अस्तित्व के समस्त ताने-बाने में — और सर्वोपरि, हृदय में, जहाँ उनके रूप का ध्यान करने वाला भक्त भीतर विराजमान ब्रह्म का साक्षात्कार करता है — पहचानना है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज यह अध्याय जो देखना सिखाता है, उसका अभ्यास कीजिए। दिन भर, किसी एक साधारण वस्तु को — खिड़की से आती धूप, एक वृक्ष, अपनी देह में श्वास — यह स्मरण कराने दीजिए कि वह भगवान् के ही रूप की है। जब आप सूर्य को देखें, सूत के वचन स्मरण कीजिए कि वह जगत् को धारण करने वाले श्रीहरि का ही रूप है। और, अध्याय के परामर्श का अनुसरण करते हुए, प्रातः शुद्ध होकर भगवान् के रूप का — उनके शंख, चक्र, गदा तथा कमल का — अपने मन में चित्रण कीजिए, ऋषियों के साथ प्रार्थना करते हुए, “अपने सेवकों की रक्षा कीजिए।” अन्त में “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” का एक निश्चित संख्या में जप कीजिए, समस्त वस्तुओं में और सर्वाधिक अपने ही हृदय में भगवान् को देखने का अपना संकल्प अर्पित करते हुए।

उपसंहार

द्वादश स्कन्ध का एकादश अध्याय हमारी दृष्टि को ऋषि की कथा से उठाकर स्वयं ईश्वर के रूप तक ले जाता है। उपासना के विषय में ऋषियों के प्रश्न का उत्तर देते हुए, सूत गोस्वामी उस विराट पुरुष को प्रकट करते हैं जिसकी देह ही विश्व है, और फिर भगवान् के ध्यान-रूप को खोलते हैं जिसमें प्रत्येक आभूषण तथा आयुध सत्ता का एक जीवन्त तत्त्व है — मणि उनकी आत्मा, गदा उनकी प्राण-शक्ति, चक्र उनकी अग्नि, शय्या अव्यक्त तथा छत्र उनका अपना सनातन धाम। वे श्रीकृष्ण, भक्तों के रक्षक, की एक कोमल स्तुति करते हैं, और सूर्य-देव की महिमा से समापन करते हैं, जो स्वयं श्रीहरि ही हैं, बारह मासों में अपने पावन परिकरों सहित लोकों को प्रत्येक युग में धारण करते हुए। अध्याय हमें एक ज्योतिर्मय शिक्षा दे जाता है: कि समस्त सृष्टि, और उसे प्रकाशित करता सूर्य, और हमारे भीतर की आत्मा, सभी एक ही अनन्त भगवान् के रूप तथा उपस्थिति हैं।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्पूर्ण), द्वादश स्कन्ध, एकादश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ॰ श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-12-adhyay-11-bhagavan-dhyan-roop-surya-dev-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट